आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (2-15 नवंबर, 2025)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं संबंधित जानकारी

फसल मौसम 2025-26

मौसम संबंधी आंकड़ों के अनुसार गेहूं की समय पर बुवाई के लिए तापमान बहुत उपयुक्त है।देशभर में अब बुआई जोर पकड़ रही है और किसान समय, श्रम और बीज बचाने के लिए मशीन से बुआई को प्राथमिकता दे रहे हैं। किसानों को सलाह दी जाती है कि अधिक उपज प्राप्त करने के लिए वे बुआई के समय और स्थिति के आधार पर बहुत सावधानी से किस्मों का चयन करें। बीज किसी विश्वसनीय स्रोत से खरीदना चाहिए।

सामान्य सुझाव

- अपने क्षेत्र और स्थिति के लिए सर्वोतम उपयुक्त किस्म चुनें।
- कंबाइन से काटी गई धान के खेत में, फसल अवशेषों की उपस्थिति में हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग कर के सीधे गेहूं की बुवाई की जा सकती है।
- गेहूं की फसल में परिपक्वता के आसपास गर्मी के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उपज के नुकसान से बचने के लिए समय पर बुआई करें और बुआई में देरी से बचें।
- रोग की संवेदनशीलता के जोखिम से बचने के लिए अन्य क्षेत्रों की किस्में न उगाएं।
- फसल के अछे स्वस्थ को सुनिश्चित करने, बीज जनित और मृदा जनित रोगों जैसे लूज स्मट, फ्लैग स्मट, करनाल बंट और सीडलिंग ब्लाइट से सुरक्षा के लिए, किसानों को बुवाई से पहले बीजों का उपचार करने की सलाह दी जाती है।
- अधिकतम उपज के लिए अपनी फसल को इष्टतम इनपुट (उर्वरक, सिंचाई जल, शाकनाशी और कवकनाशी) के साथ प्रबंधित करें।
- पानी बचाने और लागत में कटौती के लिए खेतों की समय पर और विवेकपूर्ण सिंचाई करें।
- सर्वोतम पोषक तत्व प्रबंधन के लिए बुवाई से पहले मृदा परीक्षण करने की अनुशंसा की जाती है।
- पराली न जलाएँ, क्योंकि इससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है और मृदा स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

क्षेत्र	उत्पादन स्थितियाँ	क़िस्म
अगेती बोई जाने वाली किस्में		
एनडब्ल्यूपीजेड: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिम यूपी	सिंचित, अगेती बोई जाने वाली (नवंबर के पहले सप्ताह तक)	डीबीडब्ल्यू 187, डीबीडब्ल्यू 303, डब्ल्यूएच 1270, डीबीडब्ल्यू 327, डीबीडब्ल्यू 332, पीबीडब्ल्यू 872, डीबीडब्ल्यू 370, डीबीडब्ल्यू 371, डीबीडब्ल्यू 372
सीजेड:एमपी, गुजरात, राजस्थान		डीबीडब्ल्यू 187, डीबीडब्ल्यू 303, डीबीडब्ल्यू 327, जीडब्ल्यू 543
समय पर बोई जाने वाली किस्में		
एनडब्ल्यूपीजेड: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिम यूपी	सिंचित, समय पर बोया गया (20 नवंबर तक)	डीबीडब्ल्यू 187, डीबीडब्ल्यू 222, एचडी 3406, पीबीडब्ल्यू 826, पीबीडब्ल्यू 3226, एचडी 3086, एचडी 3386, एचडी 3411, डब्ल्यूएच 1105, डीबीडब्ल्यू 296 तथा डब्ल्यूएच 1402 (प्रतिबंधित सिंचाई)

एनईपीजेड: पूर्वी यूपी, बिहार, बंगाल, झारखंड		डीबीडब्ल्यू 187, पीबीडब्ल्यू 826, एचडी 3411, डीबीडब्ल्यू 222, एचडी 3086, के 1006, डीबीडब्ल्यू 386, डीबीडब्ल्यू 252 तथा एचडी 3293 (प्रतिबंधित सिंचाई)
सीजेड:एमपी, गुजरात, राजस्थान		डीबीडब्ल्यू 303, डीबीडब्ल्यू 187, एचआई 1636, एचआई 1650, एमएसीएस 6768, जीडब्ल्यू 366, जीडब्ल्यू 547, एचआई 8759 (डी), एचआई 8830(डी), डीबीडब्ल्यू 110 तथा सीजी 1040 (प्रतिबंधित सिंचाई)
पीजेड: महाराष्ट्र, कर्नाटक		डीबीडब्ल्यू 168, डीबीडब्ल्यू 443, एमएसीएस 6478, यूएएस 304, एमएसीएस 6222, एमएसीएस 4100(डी), पीबीडब्ल्यू 891, डब्ल्यूएच 1306

(डी) ड्यूरम गेहूं (कठिया गेहूं) को दर्शाता है

उत्तरी, पूर्वी और मध्य भारत में समय पर, बुआई के लिए गेहूं की किस्में

बुआई का समय, बीज दर और उर्वरक प्रयोग: भारत में गेहूं की फसल विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उत्पादन स्थितियों में उगाई जाती है। बुआई के समय में क्षेत्र दर क्षेत्र और अलग-अलग उत्पादन परिस्थितियों में थोड़ा अंतर होता है। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।

गेहूं की फसल के लिए क्षेत्रवार बुआई बीज दर एवं उर्वरक की मात्रा

क्षेत्र	बुआई की स्थिति	बीज दर	उर्वरक की खुराक और प्रयोग का समय
एनडब्ल्यूपीजेड	सिंचित, अगेती बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	225:90:60 किग्रा एनपीके/हे (बुवाई के समय बेसल के रूप में 1/3 एन और पूर्ण पी और केऔर शेष एनको पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में विभाजित करें)
सीजेड	सिंचित, अगेती बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	180:90:40 किग्रा एनपीके/हे (बुवाई के समय बेसल के रूप में 1/3 एन और पूर्ण पी और केऔर शेष एनको पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में विभाजित करें)
एनडब्ल्यूपीजेड और एनईपीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	150:60:40 किग्रा एनपीके/हे (बुवाई के समय बेसल के रूप में 1/3 एन और पूर्ण पी और केऔर शेष एनको पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में विभाजित करें)
सीजेड, पीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	120:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)

एनडब्ल्यूपीजेड, एनईपीजेड, सीजेड और पीजेड	सीमित सिंचाई, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हैक्टर	90:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)

बीज उपचार

- बुवाई से पहले गेहूँ के बीज को कार्बोक्सिन 75 WP @ 2.5 ग्राम/किग्रा, कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 2.5 ग्राम/किग्रा, या टेबुकोनाज़ोल 2DS @ 1.25 ग्राम/किग्रा की दर से उपचारित करें।
- उपचारित बीजों का उपयोग केवल बुवाई के लिए करें, भोजन या चारे के लिए नहीं।

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी का छिड़काव)

• बहुशाकनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) सहित विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का अकेले या पेंडिमेथालिन 30 ईसी 2.0 लीटर/एकड़ के साथ छिड़काव करें।

• बुवाई के 0-3 दिन बाद 150-200 लीटर पानी का उपयोग करके 800 मिलीलीटर/एकड़ की दर से एक्लोनिफेन + डाइफ्लुफेनिकन + पाइरोक्सासल्फोन (मैटेनो मोर) के तैयार मिश्रण का छिड़काव करें।

• कठिया गेहूं में पाइरोक्सासल्फोन आधारित शाकनाशी के प्रयोग से बचें।

(रतन तिवारी)

निदेशक